

यारडंग की रचना ज्यून के विपरीत होती है। जब कोमल तथा कठोर चट्टानों के स्तर लम्बवत् दिशा में मिलते हैं तो पवन कठोर शैल की अपेक्षा मुलायम शैल को शीघ्र अपरक्षि करके उड़ा ले जाती है। इस प्रकार कठोर शैलों के मध्य कोमल शैलों के अपरक्षित होकर उड़ जाने के कारण कठोर चट्टानों के भाग खड़े रह जाते हैं। इन शैलों के पार्श्व में पवन द्वारा कटाव होने से नालियाँ बन जाती हैं। इस तरह के मरुस्थलरूप को यारडंग कहते हैं। यारडंग प्रायः पवन की दिशा में समानान्तर रूप में होते हैं। इनकी ऊंचाई 20 फीट तक तथा चौड़ाई 30 से 120 फीट तक होती है। यारडंग का निर्माण निश्चित रूप से पवन के अपघर्षण (abrasion) कार्य द्वारा होता है।



चित्र: यारडंग

7. ट्राइकॉण्डर (dreikander) → पथरीले मरुस्थलों में सतह पर पड़े शिलाखण्डों पर पवन से अपरदन द्वारा खरोचें पड़ जाती हैं, जिस कारण शिलाखण्ड या पत्थर के टुकड़ों पर तरह-तरह की नक्काशी हो जाती है। यदि पवन कई दिशाओं से होकर चलती है तो इन शिलाखण्डों की आकृति चतुष्फलक जैसी हो जाती है, जिसका एक फल या फलक क्षुब्ध पर होता है तथा शेष तीन फलक बाहर की ओर होते हैं। इस प्रकार बाहर की ओर निकले तीन फलक या पार्श्वों वाले टुकड़ों को त्रिकोणाकार टुकड़ा या ट्राइकॉण्डर कहते हैं। इन टुकड़ों पर पवन के खरोचों से उत्पन्न खरोचें स्पष्ट नजर आती हैं। तीन फलक (faces) वाले टॉवर को ट्राइकॉण्डर तथा 8 अपघर्षित फलक वाले टॉवर को वेन्डीफैक्ट कहते हैं।

8. जालक या जालीदार शिला (Stone lattice)

मुख्यतः पर्वतीय भागों में जब सशक्त पवन के सामने ऐसी शिलाएं पड़ जाती हैं, जिनकी संरचना विभिन्न स्वभाव वाली चट्टानों से हुई होती है अर्थात् जिनके विभिन्न भागों में कठोरता में पर्याप्त भिन्नता होती है तो पवन रेत कणों की सहायता से अपघर्षण द्वारा शैल के कौमल भागों को अपरदन करके उड़ा ले जाती है, परन्तु कठोर भाग यथास्थान स्थिर रहते हैं। इस प्रकार के अपरदन के कारण शैल भाग में जाली का निर्माण हो जाता है। इस तरह की शैल को जालीदार शैल या जालक शैल या अधिशुभ्र जालक कहते हैं।

9. पुल तथा खिड़की (bridge and window)

जालीदार शिला में पवन के अपरदन द्वारा पवनानुगामी भाग में खिड़की हो जाता है। पवन धीरे-धीरे इस खिड़की के विघटित पदार्थों को उड़ा-उड़ा कर उसे विस्तृत करती जाती है। एक नमूने समय तक अपरदन के कारण यह खिड़की शैल के आर-पार हो जाता है। शैल के इस आर-पार खिड़की को पवन खिड़की या पवन वातापन (wind window) कहा जाता है। इस खिड़की से हवा अपरदन द्वारा चट्टान का खनन, खनन, नीचे तक कटाव हो जाता है। परन्तु ऊपरी भाग खत के रूप में वर्तमान रहता है। इस तरह एक महाराज (arch) की आकृति का निर्माण होता है। इसे पुल भी कहा जाता है।

पवन का निक्षेपण (deposition) कार्य अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इस कार्य द्वारा बालुका स्तूपों (sand dunes) तथा लोपत जैसी महत्वपूर्ण स्थलों का निर्माण होता है। पवन द्वारा रेत (बालुका) से निर्मित हिल्लों या स्तूपों को बालुका स्तूप कहा जाता है। यह शुष्क, अर्धशुष्क, तटीय भागों, जीलों के रेतीले तटों पर आदि मिलता है। बरकान, अनुप्रस्थ बालुका स्तूप के ही विशिष्ट रूप होते हैं। आदिपों के पीछे निर्मित स्तूपों को जंबखा कहते हैं। रेगिस्तानी भागों में पर्वतों से घिरी बेलिन को बालखन (balloons) कहा जाता है। प्लेया तथा पर्वतीय अग्रभाग के मध्य मन्द गल वाले मैदान होते हैं। पर्वतीय अग्रभाग तथा बजाव के मध्य अपरदन शैल सतह वाले सामान्य गल वाले भाग को पंजीमण्ट कहते हैं।











